चालीसा का दूसरा रविवार

Caritas INDIA
The Joy of Service...

"खीस्तीय विश्वासी अपने भाइयों और बहनों के लिए नई आशा और आजीविका का तम्बू खड़ा करने के लिए मसीह के साथ अपने जीवन को रुपान्तरित करने के लिए बुलाये गए हैं।"

दूसरे रविवार के लिए विशेष विषयवस्तु

8 मार्च 2020

पहला पाठ – उत्पत्ति ग्रंथ 12: 1–4
दूसरा पाठ – तिमथी 1: 8–10
सुसमाचार – मत्ती 17: 1–9

पवित्र खीस्तत्याग की पृष्ठभूमि

आज हम चालीसे के दूसरे रविवार का अनुपालन कर रहे हैं, और नई उम्मीद और आजीविका का तम्बू खड़ा करने के लिए मसीह के साथ रुपान्तरित होने के लिए बुलाये गये हैं।

आज के सभी पाठ हमें ईश्वर की शक्ति को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करती है और नए क्षेत्रों और वादों में जाकर, अपनी प्रतिबध्दताओं से परे एक नए जीवन और आजीविका के अवसरों को तलाश करने के लिए उत्प्रेरित करती है। ईश्वर द्वारा अब्राहम की बुलाहट हमें याद दिलाती है कि हम जीवन के असाधारण उपहार के साथ शोभित है और ईश्वर द्वारा विषेश रुप से बुलाये गए हैं जिससे कि हम हमारे आस पास के लोगों के लिए आर्शीवाद बनें। अब्राहम की तरह हमें भी ईश्वर आज्ञाओं का पालन करना चाहिए जब कभी ईश्वर हमें बुलाते हैं।

आज का सुसमाचार हमें बताते हैं कि पिता ईश्वर, येसु खीस्त और हमें कितना प्यार करते हैं? यह एक नमूना के रुप में काम करता है और एक अनुस्मारक है कि जीवन के मुश्किल घड़ी का सामना करने के लिए वह हमे सदा तैयार करते हुए सक्रिय रहते हैं।

येसु का रुपान्तरण एक उम्मीद और विस्मिय की कहानी है जो शिष्यों को भविष्य के सकारात्मक पहलुओं के बारे में कुछ दिखाया और भविष्य में जो घटित होने वाले हैं उनपर उम्मीद जगाई। दुनिया में खीस्त के रुपान्तरण का गवाह बनने के लिए सभी विश्वासियों को बुलाया और याद दिलाया जाता है। आइए इस चालीसे काल मे हम ईश्वर के बुलावा के प्रति खुले विचारों से ईमानदार बने रहे।

धर्मोपदेश

खीस्त में प्यारे भाइयों एवं बहनो

चालीसा का काल अनुग्रह का समय होता है जहाँ हम ईश्वर का मानव जाति के लिए असीमित प्यार का अनुभव प्रभु येसु के पास्का रहस्य के माध्यम से करते हैं और अपने गुनाओं को ईश्वर के समक्ष रखते हैं। पॉप फ्रान्सिस हमें याद दिलाते हैं कि चालीसा काल को व्यर्थ में नहीं जाने देना चाहिए अपितु ईश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ बनकर, विषेशकर सृष्टि और हमारे भाइयों और बहनों के हित में उनके नियमों का स्वीकार एवं पालन करना चाहिए। इस प्रकार चालीसा के अर्थपूर्ण अनुपालन से आइए हम पास्का के रहस्य को मनाने के लिए अपने मन और दिल को नवनीकृत करें।

उत्पत्ति ग्रन्थ से आज का पहला पाठ विश्वास के पिता अब्राहम और उसके परिवार को दिए गए आर्शीवाद के वादे को चिह्नित करती है। ईश्वर की यह प्रतिज्ञा अब्राहम की ओर से पूरी आज्ञाकारिता और ईश्वर के इच्छा के प्रति सर्मपण की माँग करती है। ईश्वर का वचन अब्राहम के लिए एक आदेश से शुरु होता है, कि वह अपने देश, अपने सम्बन्धियों और अपने पिता से दूर उस देश में जाता है जहाँ ईश्वर उन्हें जाने के लिए कहते है। यह आदेश अब्राहम के लिए परिवारिक रिश्तों से दूर अत्यन्त कष्टमय हो जाताा है। ईश्वर अब्राहम से पूर्ण निष्ठा और सर्मपण के साथ अपने आदेश के प्रति प्रतिबध्दता और आज्ञाकारिता की माँग करते हैं।

उत्पत्ति ग्रन्थ 1–11 में हम विद्रोही और भ्रष्ट मानवता की कहानी को देखते हैं जो मनुष्य के पतन की शुरुआत है। हाबिल, नूह और बाढ़ की कहानी और बाबेल का मीनार इन अध्यायों में वर्णित बार बार किए गए अवज्ञा, बेवफाई, विद्रोही और मानव के हिंसक स्वभाव पर ध्यान केन्द्रित करती है जो पापों की प्रतिबध्दता और ईश्वर के वचन के अवज्ञा के माध्यम से बिगड़ती है।

अब्राहम को ईश्वर की प्रतिज्ञा मुक्ति के इतिहास में नाटकीय परिवर्तन का संकेत देती है। यह एक प्रतिज्ञा था कि वह एक बड़े राष्ट्र का पिता बनेगा। मैं तुम्हे एक महान राष्ट्र बनाउंगा और तुम्हें आर्शीवाद दूंगा और तुम्हारा नाम महान बनाउंगा ताकि तुम एक वरदान बन जाओ। मैं उन लोगों को आर्शीवाद दूंगा जो तुम्हें आर्शीवाद देंगें और आपको

जो शाप देगें वे शापित होगें और आपके द्वारा पृथ्वी के सभी परिवार स्वयं को धन्य करेंगें। इस तरह ईश्वर अब्राहम से भविष्य के बारे में स्पष्ट शब्दों में अपने वादे करता है जो अब्राहम और उनके पूर्वजों को जागृत करता है और इस वादों को हम बाद के अध्यायों में पूरा होते देखते हैं।

अब्राहम की प्रतिक्रया सबसे उल्लेखनीय है क्योंकि वह ईश्वर के वादे को मानता था और उसने वही किया जो ईश्वर उससे चाहते थे। रोमन 4:18–21 वर्णन करता है : आशा के विरुध्द आशा करते हुए, उसने विश्वास किया कि वह कई राष्ट्रों के पिता बन जायेंगें जैसे कहा गया था कि उनके कई वशंज होगें।

आज के दूसरे पाठ में प्रेरित पौलुस ने तिमोथी को बहादूर बनने के लिए प्रोत्साहित किया और उसकी पुकार की पुष्टि की। पौलुस अपने प्रिय मित्र तिमथी को याद दिलाते हैं कि ईश्वर की आत्मा आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती है। परिणामस्वरुप वह सुसमाचार के खातिर कष्ट उठाने के लिए सशक्त किया जाएगा और सताये गए भाईयों एवं बहनों के कष्टों के प्रति सहभागी होगा।

संत मत्ती के सुसमाचार 17:1–9 में शिष्यों ने येसु को बिलकुल दिब्य महिमा में खुद को प्रकट करते हुए देखा जब येसु ने टैबोर पवर्त पर शिष्यों के सामने अपने आप को रुपान्तरित किया। पॉप फ्रान्सिस हमें याद दिलाते हैं कि येसु का पवर्त पर रुपान्तरण येरुसलेम पर उनके दुखभोग की प्रस्तावना है। पॉप फ्रान्सिस हमें समझाते हैं कि येसु के रुपान्तरण से शिष्यों और हमें यह समझने में मदद मिलती है कि येसु मसीह का पीड़ामय दुख एक रहस्य है परन्तु यह उनके तरफ से हमारे लिए असीमित प्रेम का उपहार है। पवर्त पर येसु के रुपान्तरण की यह घटना हमें उनके पुनरुत्थान के बारे में भी बेहतर रुप से समझाती है।

चालीसा एक ऐसा समय है जब हम ईश्वर के पवर्त पर येसु के साथ चढ़ते हैं और उसके साथ रुकते हैं, ईश्वर के आवाज के प्रति अधिक चौकस होतें है और अपने आपको आत्मा से रुपान्तरित कर ढँकते हैं। **"उसकी सुनो"**, बादल से गुंजते हुए पिता ईश्वर की यह आवाज हमारे लिए एक महत्वपूर्ण सन्देश है। उसे सुनो का मतलब है उसके प्यार में जोशपूर्ण होना, उसके शब्दों द्वारा सिखाया जाना और उसके साथ रुपान्तरित होना।

रुपान्तरण के पवर्त पर, पेत्रुस बहुत जल्दी जवाब देने और बहुत देर से सोचने की अपनी गलती को दोहराता है। वह ईश्वर की उस महिमा से आश्चर्यचकित था जिसका वह गवाह बना था। वह रुपान्तरण के समय मूसा और इलियास की उपस्थिति से चकाचौंध था। वह बोल ही रहा था कि उज्ज्वल बादल ने ढँक लिया और बादल से एक आवाज सुनाई दी, **"यह मेरा प्रिय पुत्र है इसकी सुनो"।** चालीसा काल में उसे सुनना, प्रार्थना के मनोभाव में हो जाने के लिए एक निमंत्रण है जहाँ हम अन्ततः भगवान को अधिक ध्यान से सुनते हैं और अधिक घनिष्ठता से उसका पालन करते हैं। पर्वत पर रुपान्तरण को ध्यान में रखते हुए पॉप फ्रान्सिस प्रार्थनामय जीवन के दो शब्दों उतार और चढ़ाव की ओर हमारे ध्यान को आर्कषित करते हैं। हम प्रभु के पवर्त पर चढ़ते हैं और उसकी उपस्थिति में खड़े होते हैं ताकि स्वयं को पा सकें और प्रभु की वाणी का अनुभव कर सकें। यह हम प्रार्थना में करते हैं। लेकिन हम वहाँ नहीं रह सकते हैं। प्रार्थना में भगवान से सामना करना हमें पवर्त से उतरने और समभूमि पर जाने के लिए प्रेरित करता है जहाँ हम उन भाइयों से मिलते हैं जो थकान, बीमारी, अन्याय, अज्ञानता, आर्थिक और अध्यात्मिक गरीबी से दबे हुए हैं।

इब्रानियों के नाम पत्र 11:8 – 9 हम पढ़ते हैं कि जब अब्राहम को उस स्थान पर जाने के लिए कहा जाता है जो उसे विरासत के रुप में प्राप्त होना था, जगह से अनभिज्ञ पर वह विश्वास के द्वारा उसने अपने बुलावे को स्वीकार किया और चला जाता है। विश्वास के साथ वह परदेसी बनकर प्रतिज्ञात देश में रहने लगा, वह इसाहक, याकूब और उसके वशंजो के साथ उसी वादे के साथ तम्बू में रहते थे। ईश्वर के साथ अब्राहम की सामना ने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। ईश्वर के स्वामित्व और अब्राहम का ईश्वर के प्रति सर्मपण को इंगित करने के लिए ईश्वर उसके नाम को बदलता है। येसु ख्रीस्त का रुपान्तरण उसके आत्म सर्मपण द्वारा क्रूस महिमा में लौटने का आदिरुप है। जब हम भी येसु ख्रीस्त के सामने समपर्ण करते हैं महिमा हमारा इन्तजार करता है। पेत्रुस अपने शब्दों के माध्यम से येसु को मसीह के रुप में स्वीकार किया और यह रुपान्तरण के ठीक पहले हुआ था।

हमारे जीवन के रास्ते के माध्यम से येसु को पालन करना इतना आसान नहीं है क्योंकि यह ईश्वर की इच्छा के प्रति आत्म सर्मपण होना और उसे

एक नया पथ बनाने की माँग करता है। येसु का रुपान्तरण हमारे बहनों और भाइयों के लिए नई आशाओं और मतलब का तम्बु को प्रस्तुत करता है जो नए जीवन और आजीविका की तलाश करते हैं। चालीसा का यह काल हमारे बहनों और भाइयों के दिल को खोल दें जिन्हें अपने जीवन और आजीविका को रोशन करने के लिए हमारे सर्मथन की जरुरत है।

विश्वासियों की प्रार्थनायें

अनुष्ठानकर्ता – ईश्वर हमें अपने दिव्य पुत्र की महिमा प्रकट करता है और वह हमें उनकी बातें सुनने के लिए आमंत्रित करता है। जब हम विनम्रता और सेवा की मिसाल के तौर पर येसु का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं ईश्वर के आर्शीवाद के लिए प्राथर्ना करें और अपने निवेदनों को उसके सामने प्रस्तुत करें।

उत्तर – हे प्रभु हमारी प्रार्थना सुन।

1. पॉप फ्रान्सिस और कलीसिया के सभी नेताओं के लिए ईश्वर की विशेष अनुग्रह और कृपा के लिए प्रार्थना करें जिससे कि वे ईश्वर के बुलाहट में आज्ञाकारी और निडर बने रहें। ईश्वर की महिमा के लिए वे एक समुदाय के रुप में लोगों का मार्गदर्शन और नेतृत्व कर सकें। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

2. लोकधर्मियों के लिए प्रार्थना करें कि वे जीवन के अनमोल उपहार और इससे प्राप्त होने वाले सभी आर्शीवादों के लिए इसकी सराहना करें। हम येसु के शिक्षाओं को अपनाने और कम भाग्यशाली लोगों के जीवन निर्वाह और उत्थान के लिए उन तक अपनी पहँच बनाने के लिए प्रेरित हो सकें। इसके हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

3. चुनौतीपूर्ण परिस्थयों में अथक परिश्रम करने वाले लोग कठिनाइयों के बावजूद प्रेरित होते रहें और नई आशा, नई जिन्दगी लाने और आजीविका के अवसर पैदा करने वाले समुदायों के बीच ईश्वर के तम्बू का निमार्ण कर सके। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

4. हम बीमारों और जरुरतमन्दों के लिए प्रार्थना करें कि वे हिम्मत न हारें और मुश्किलों और कठिनाइयों के बीच अपने जीवन में सात्वंना पा सकें। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

5. चालीसा काल के दौरान अपने और दूसरों के जीवन की गरिमा को कम करने वाले सभी विचारों पर अवलोकन करने के लिए प्रेरित होते है और उनसे दूर रहने के लिए प्रेरित होते हैं। हम सभी ख्रीस्तीय बुलाहट को सुने और अपने आप को नवनीकृत कर येसु ख्रीस्त के रुपान्तरण में अपने आप को ढालने के लिए प्रेरित हो सकें। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

निष्कर्ष

हे प्रेमी पिता चालीसा का यह काल हमारे लिए आपका उदार उपहार है। हमें आत्मा से नवनीकृत कर, हमारे दिलों को शुध्द कर और हमें और हमारे भाइयों एवं बहनों को स्वतंत्रता में सेवा करने के लिए मदद कर। हम यह प्रार्थना करते हैं उन्हीं हमारे प्रभु ख्रीस्त के द्वारा .....आमेन!

(सौजन्यः फादर जेसन वडासेरी, सचिव, श्रम, सी•बी•सी•आई)

उपवास, अर्थात, दूसरों और सृष्टि के सभी लोगों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलना सीखना, हमारी व्यर्थता को संतुष्ट करने के लिए सब कुछ "भक्षण" से दूर हो जाना और प्यार के लिए पीड़ित होने के लिए तैयार होना, जो हमारे दिलों के खालीपन को भर सकता है।

प्रार्थना, जो हमें मूर्तिपूजा और हमारे अहंकार की आत्मनिर्भरता को त्यागना और प्रभु और उसकी दया की हमारी आवश्यकता को स्वीकार करना सिखाती है।

दान, जिससे हम भ्रम में खुद के लिए सब कुछ जमा करने के पागलपन से बच जाते है कि हम एक भविष्य को सुरक्षित कर सकते है।

आइए हम अपने स्वार्थ और आत्म–अवशोषण को पीछे छोड. दें और यीशु के पास जाएं। आइए हम अपने भाइयों और बहनों की ज़रुरत के मुताबिक खड़े हों, हमारे आध्यात्मिक और भौतिक वस्तुओं को उनके साथ साझा करें।

संत पिता फ्रांसिस
का चालीसा संदेश 2019

Caritas® INDIA
The Joy of Service...

Campaign Against Hunger & Disease | 2020

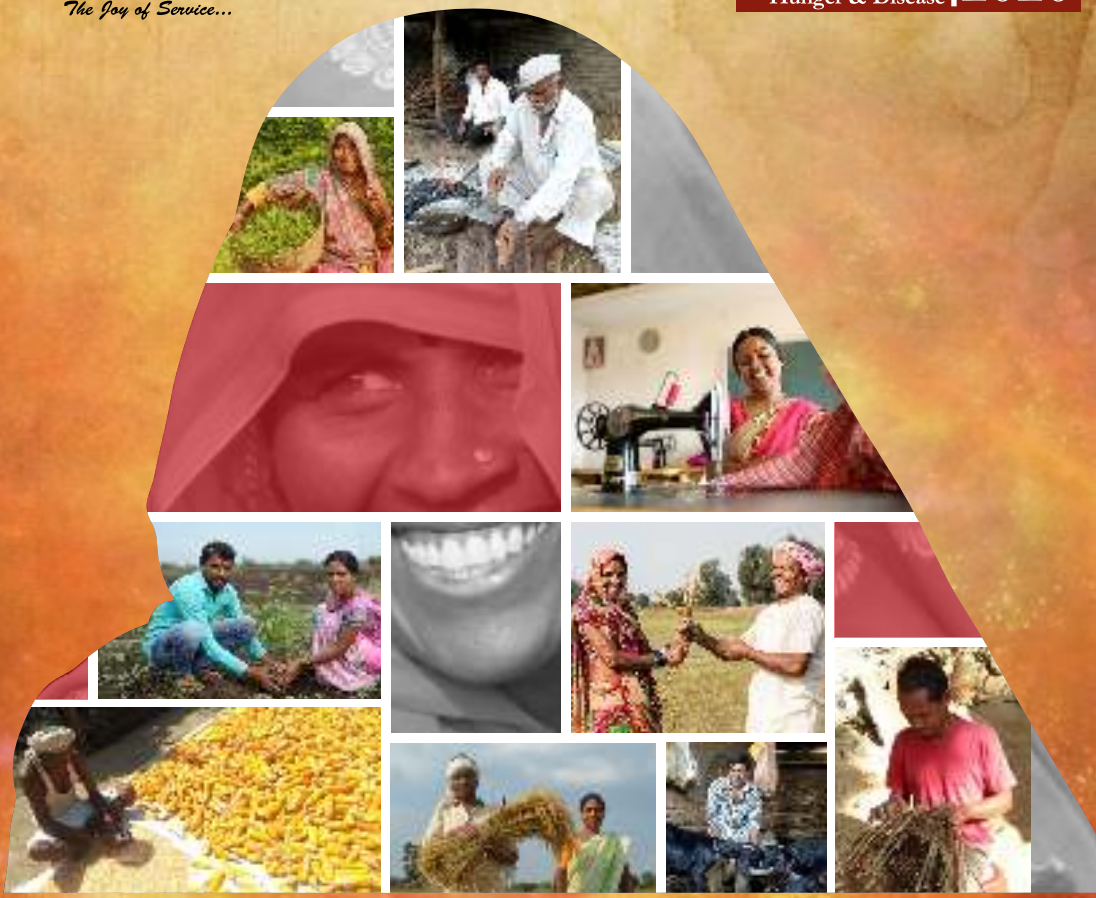

Sustain | Sustainable
Life | Livelihood
समृद्ध जीवनः सतत आजीविका

करीतास इण्डिया अपने वार्षिक चालीसा कालीन अभियान के तहत "**समृद्ध जीवनः सतत आजीविका**" के विषयवस्तु पर सभी को साथ आने के लिए आमंत्रित करती है कि वे एक उत्प्रेरक के रुप में प्रत्येक जन एक जन की मदद के दृष्टिकोण से लोगों तक अपनी पहुँच बनाकर" "**सतत आजीविका**" के लिए परिवर्तन का एक जरिया बने।

इस चालीसा काल में आइए हम संकल्प करें कि जीवन की निरंतरता के लिए आर्थिक और गैर आर्थिक रुप से अपना योगदान दें। इसका मतलब यह नहीं कि हम गरीबी उन्मूलन के लिए काम करें बल्कि लोगों में क्षमता वृध्दि करें जिससे कि वे जीवन में आने वाले बाधाओं / रुकावटों का सामना कर सकें। इसका मतलब यह भी है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग स्थायी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर जीवन व्यतीत करना शुरु करें जिससे कि कार्बन उर्त्सजन को कम कर सकें। इसके लिए हम पर्यावरण के अनुकूल यात्रा के तरीके, बेकार के उत्पाद का पुनःचक्रित और समुदाय को सक्षम बनाने की पहल को बढ़ावा दे सकते हैं।